डॉ० संगीता राय
अतिथि शिक्षक
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा।

देवता परिचय :—

इन्द्र देव

इन्द्र सूक्त के ऋषि गृत्समद, देवता इन्द्र तथा छन्द त्रिष्टुप है। इन्द्र वैदिक आर्यों का प्रमुखतम राष्ट्रीय देवता है। अन्तरिक्ष स्थानीय देवताओं में इन्द्र का सर्वप्रथम स्थान प्राप्त है। ऋग्वेद में इनकी स्तुति में 250 सूक्त सम्बोधित किये गये हैं।

इन्द्र शब्द का निर्वचन यास्क ने निरुक्त 10/8 में इन्द्र देवता की महत्ता के अनुरूप अनेक प्रकार से किया है। यथा — "इन्द्रः इरां दृणातीति वा" इरा अर्थात् अन्न का विदारण करने वाला। "इरां ददातीति वा" इरा (अन्न) का दान करने वाला। "इरां दधातीति वा" इरा को धारण करने वाला। "इरां दारयत इतिवा" जो अन्न के विदारण को संचालित करे। इत्यादि अनेक प्रकार से इन्द्र का निर्वचन प्राप्त होता है।

इन्द्र के स्वरूप को निम्नांकित रूपों में देखा जा सकता है: —

1) आकार-प्रकार :— मानवाकृति के रूप में इन्द्र के हाथ, पैर, सिर इत्यादि अंगों का उल्लेख किया गया है। उसका पेट सोम से भरे हुए सरोवर के समान है। उसके होठों के अत्यन्त सुन्दर होने के कारण उसको सुशिप्र कहा ~~गया~~ गया है। अपने प्रधान वज्र को धारण करने के कारण 'वज्रिन्' 'वज्रबाहु' आदि कई नामों से पुकारा गया है। 'उसके वस्त्र का निर्माण 'त्वष्टा' ने किया था। इन्द्र का रथ मन से भी वेगवान तथा स्वर्णिम है। उसके रथ को दो हरित वर्ण अश्व खींचते हैं।

जन्म :→ ऋग्वेद में इन्द्र की उत्पत्ति का उल्लेख किया गया है। वह अपनी माता को मार कर अस्वाभाविक रूप से उसके बगल से उत्पन्न हुआ। उत्पन्न होते ही उसने अपने पराक्रम का परिचय दिया जिससे आकाश और पृथ्वी काँपने लगे — "यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेताम"। पुरुष सूक्त में इन्द्र की उत्पत्ति पुरुष के मुख से बताई गयी है — "मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च"।

अन्य देवताओं के साथ इन्द्र का सम्बन्ध :→ इन्द्र का सम्बन्ध अनेक देवताओं से है। मरुत् उसके मित्र हैं, जो युद्ध में उसकी सहायता करते हैं। अतएव उसको मरुत्सखा, मरुत्वान्, आदि नामों से पुकारा जाता है। अग्नि के साथ अनेक सूक्तों में उसकी स्तुति की गई है। वरुण, वायु, सोम, बृहस्पति, पूषन् तथा विष्णु के साथ इन्द्र की स्तुति की गयी है।

पेय पदार्थ :→ इन्द्र का सर्वश्रेष्ठ पेय सोम है। इसलिए उसको 'सोमपा' कहा गया है। — "यो सोमपा निचितो वज्रबाहु"। वृत्रासुर के साथ युद्ध के समय इन्द्र ने सोम से भरे हुए तीन सरोवरों को खाली कर दिया था।

आयुध व रथ :→ इन्द्र का प्रसिद्ध आयुध 'वज्र' है। जिसे कि विद्युत-प्रहार से अभिन्न माना जा सकता है। इन्द्र के वज्र का निर्माण 'त्वष्टा' नामक देवता विशेष द्वारा किया गया था। इन्द्र का रथ स्वर्णिम है जिसका निर्माण देव-शिल्पी अहिर्बुध्न्य द्वारा किया गया था।

शक्ति :→ इन्द्र एक शक्तिशाली देवता है। द्युलोक, अन्तरिक्षलोक तथा पृथ्वीलोक मिलकर उसकी महानता को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। शक्ति का धनी होने से उसे शक्र, शचीवान्, शचीपति, शतक्रतु आदि नामों से जाना जाता है। आकाश एवं पृथ्वी भी उसकी शक्ति

के सामने झुके हुए हैं। वह शक्ति का स्वामी है —

"यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्मात् रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः॥

कार्य :— इन्द्र के विभिन्न पराक्रमपूर्ण कार्यों में प्रमुख कार्य वृत्र-वध है। वृत्र, जिसका दूसरा नाम अहि भी है। इसने वर्षा को रोक रखा था। इसे मारकर इन्द्र ने आकाश के जल को मुक्त किया, जिससे सूखी नदियाँ जलपूर्ण हो प्रवाहित होने लगी। इन्द्र के अन्य पराक्रमपूर्ण कार्य हैं — काँपती हुई पृथ्वी को दृढ़ करना, उड़ने वाले पर्वतों को स्थिर करना, आकाश तथा पृथ्वी का विस्तार करना, पणियों को पराजित कर गायों को मुक्त करना बल नामक असुर को मारकर गायों को गुफाओं से बाहर निकालना, पर्वत पर निवास करने वाले शम्बर नामक असुर को मारना आदि —

"यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद् यः पर्वतान् प्रकुपिताँ अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्द्रः"॥

उपासकों का सहायक :— इन्द्र निर्धन तथा धनवान् सबको धन के लिए प्रेरित करता है। जो उसके लिए सोम पीसता है, पुरोडाश पकाता है, परिश्रम करता है तथा उसकी प्रशंसा करता है, उसको वह बार-बार धन प्रदान करता है। इस उदारता के कारण ही उसको मघवन् कहा जाता है।

—×—